Q. मण्डल सिद्धांत पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

Ans. प्राचीन भारतीय विचारकों ने राज्यों के पारस्परिक युद्धों को अवश्यम्भावी माना है एक राज्य का दूसरे राज्य के साथ किस प्रकार के सम्बन्ध होने चाहिए, इसके लिए मण्डल सिद्धांत को प्रतिस्थापित किया है। मनु ने मण्डल सिद्धांत के मूल रूप में चार प्रकृतियों विजिगीषु, शत्रु, मध्यम तथा उदासीन को रखा है। ~~कामन्दक~~ कामन्दक के अनुसार मण्डल में मित्र उदासीन तथा रिपु को शामिल किया गया है। कौटिल्य के अनुसार मण्डल में 12 प्रकृतियाँ पायी जाती है। यही राज्य की वैदेशनीति से सम्बन्धित है। इस सिद्धांत को सबसे अधिक विवेचना कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में की है।

राज्यों का विभाजन — एक राज्य का दूसरे राज्य के साथ किस प्रकार के सम्बन्ध है, इसके लिए कौटिल्य ने मण्डल सिद्धांत को अपनाया है। इस सिद्धांत के अनुसार कौटिल्य ने राज्यों को निम्नलिखित चार श्रेणियों में विभक्त किया —

शत्रु राज्य
मित्र राज्य
मध्यम राज्य
उदासीन राज्य

शत्रु राज्य — कौटिल्य के अनुसार जिन राज्यों की सीमाएँ एक दूसरे से मिली रहती है वे समानहित और महत्वाकांक्षा के कारण एक दूसरे के स्वाभाविक शत्रु होते है। ऐसे राज्यों के समक्ष सदैव सीमा सम्बन्धी समस्याएँ विद्यमान रहती है। कौटिल्य की भाँति मनु ने भी परस्पर सम्बद्ध सीमाओं वाले राज्यों को शत्रु राज्य

माना जाता है। मनु राज्य के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, इस बारे में कौटिल्य ने अपना मत प्रगट किया है। कौटिल्य का मत है कि शत्रु राज्य से समय, परिस्थिति तथा उसकी शक्ति देखकर व्यवहार करना चाहिए विपत्ति से ग्रसित होने पर शत्रु राज्य आक्रमण के योग्य है।

मित्र राज्य

कौटिल्य के अनुसार जिन राज्यों की सीमाएं एक दूसरे से मिलती रहती हैं के समान हित और क्षेत्र विस्तार की आकांक्षा के कारण एक दूसरे के स्वभाविक शत्रु होते हैं। ऐसे राज्यों के समक्ष सदैव सीमा सम्बन्धी समस्याएं विद्यमान रहती है, कौटिल्य की भाँति, मनु ने भी परस्पर सम्बन्ध सीमाओं वाले राज्यों को शत्रु राज्य माना है। शत्रु राज्य के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, इस बारे में कौटिल्य ने अपना मत प्रगट किया है। कौटिल्य का मत है कि शत्रु राज्य से समय, परिस्थिति तथा उसकी शक्ति देखकर व्यवहार करना चाहिए।

मित्र राज्य

मित्र राज्य की दूसरी ओर शत्रु राज्य की सीमा से सम्बन्ध राज्य को कौटिल्य ने मित्र राज्य कहा है। मित्र राज्य तीन प्रकार के होते है, प्रकृतिमित्र, सहजमित्र और कृत्रिममित्र। शत्रु राज्य की सीमा से सम्बन्ध दूसरी ओर का राज्य प्रकृति मित्र है। इसके विपरीत माता-पिता से किसी प्रकार सम्बन्धित राज्य सहज मित्र है। धन तथा जीवन हेतु आश्रय ग्रहण किया हुआ राज्य कृत्रिम मित्र है।

मध्यम राज्य

कौटिल्य के अनुसार मध्यम राज्य को अभिप्राय उस राज्य से है, जो अपने तथा शत्रु राज्य दोनों की सीमा पर स्थित और दोनों राज्यों को एक साथ अलग-अलग

सहायता देता है वह मध्यम राज्य है। इस प्रकार मध्यम राज्य का अभिप्राय उस राज्य से है जो अपने तथा शत्रु राज्य दोनों की सीमा पर स्थित है और दोनों राज्यों को एक साथ अलग-अलग सहायता देता है। वह राज्य मध्यम राज्य है। इस प्रकार राज्य विजयाभिलाषी राज्य तथा शत्रु राज्य दोनों से अधिक शक्तिशाली होता है।

उदासीन राज्य

उदासीन राज्य का अभिप्राय उस राज्य से है, जो अपनी शक्तिशाली सप्त प्रकृतियों के कारण विजयाभिलाषी तथा शत्रु मध्यम तीनों राज्यों को अलग अलग अथवा एक साथ सहायता देने या अनुग्रह करने में समर्थ हो।

राज्य मण्डल के घटक

उपरोक्त चार प्रकार के राज्यों को कौटिल्य ने राज्य मण्डल का घटक माना है। इन राज्यों में प्रत्येक के राज्यों का अपना पृथक मण्डल बतलाया विजयाभिलाषी राज्य उसका मित्र राज्य तथा उसके मित्र राज्य का मित्र राज्य को क्रमशः तीन प्रकृति कहा गया है। तीनों राज्यों में से प्रत्येक राज्य की छः छः प्रकृतियों (राजा, मंत्री, कोष, दण्ड तथा जनपद) को मिलाकर अठारह प्रकृतियां होती है, जिनसे राज्य मण्डल का निर्माण होता है। ठीक उसी प्रकार शत्रु राज्य मध्यमराज्य तथा उदासीन राज्य भी क्रमशः शत्रु, मण्डल, मध्यम मण्डल तथा उदासीन मण्डल का निर्माण करते हैं। कौटिल्य का मत है कि इस राज्य मण्डल में विजयी राजा तथा उसके मित्र राजा के बीच में फंसा हुआ यदि कोई शत्रु राज्य है तो उसे पीड़ित किया जा सकता है।

कौटिल्य की भांति मनु ने भी राज्य मण्डल की चर्चा की है। मनु ने राज्य की बारह (12) प्रकृतियां

मानी है और साठ (60) उच्च प्रकृतियां। इनके योग से राज्य मण्डल युक्त होता है। चक्रवर्ती चरित में राज्यमण्डल की प्रकृतियों की ओर संकेत किया गया है।

उक्त कारणों के अनुसार मण्डल के मूल में राज्यों के बीच शक्ति-संतुलन स्थापित करने की बात निहित है। यदि राज्यों के बीच में मित्रता रहेगी तो स्वभावतः क्षुद्र राज्य विरोधी भावों से प्रेरित हो एक गुट में मिल जायेंगे। कौटिल्य के मण्डल सिद्धांत को शक्ति के सिद्धांत से सम्बन्धित किया है और बताया है कि राजा अपनी शक्तियों को जिस सीमा तक कार्यान्वित करेगा उसी सीमा तक उसके राज्य का कल्याण भी होगा।